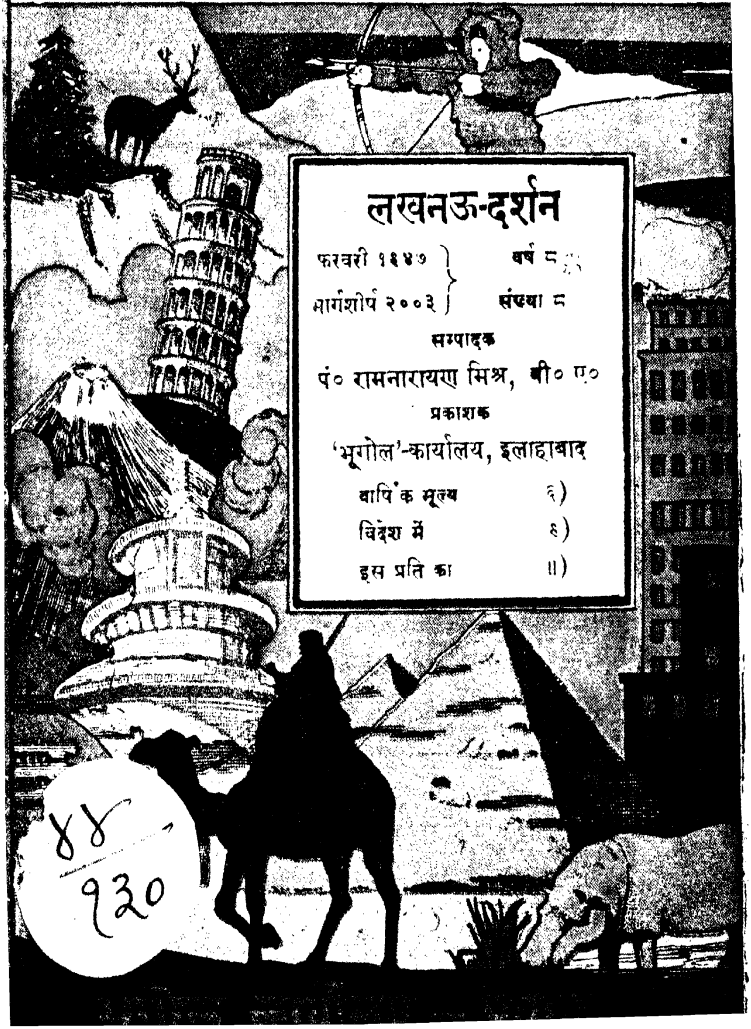
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—८६



लखनऊ-दर्शन

फरवरी १९४७ } वर्ष ८
मार्गशीर्ष २००३ } संख्या ८

सम्पादक
पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक
'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद

वार्षिक मूल्य ६)
विदेश में ८)
इस प्रति का ॥)

विषय-सूची

स्थान

स्थिति सीमा, तथा विस्तार

लखनऊ का ज़िला अवध तथा संयुक्त प्रान्त भर में सब से छोटा है। लेकिन इस ज़िले में अवध का सब से बड़ा शहर स्थित है। इसका आकार एक विषम चतुर्भुज है। इसकी औसत लम्बाई ४५ मील और चौड़ाई २५ मील है। इसका क्षेत्रफल ९६७ वर्ग मील है। इस ज़िले के पूर्व में बाराबंकी दक्षिण में रायबरेली दक्षिण-पश्चिम और पश्चिम में उन्नाव उत्तर-पश्चिम में हरदोई और उत्तर में सीतापुर का ज़िला है।

इस ज़िले में पहाड़ियों का नाम नहीं है। लेकिन यह बहुत हरा भरा है। थोड़ी थोड़ी दूर पर गांव बिखरे हुये हैं। नदियों और नालों के पड़ोस में भूमि ऊंची नीची हो गई है। नदियों के पास में ही ऊंचे रेतीले टीले हैं। इनमें सिंचाई न होने के कारण बाजरा और मोठ के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता है। ऊसर भूमि अधिकतर जिले के दक्षिण और पश्चिम में मिलती है। बिजनौर परगने में ३० फीसदी से अधिक भूमि ऊसर है। लखनऊ के एक पाताल तोड़ कुएँ की खुदाई

में १३३६ फुट की गहराई तक बालू और बालू मिली हुई कांप मिली। बीच बीच में कंकड़ की तहें थी। समुद्रतल से १००० फुट की गहराई तक वहां स्थायी जल की धारा न मिली। नदियों से दूर भूमि टूटी फूटी नहीं है। भूमि का ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर है। ढाल इतना कम है कि नदियां बिना मोड़ बनाये हुये अधिक दूर आगे नहीं बह पाती हैं। महोना के पास जिले के उत्तरी सिरे पर भूमि समुद्र तल से ४१५ फुट ऊंची है। लखनऊ के दक्षिण में आलम बाग के पास भूमि ३६४ फुट ऊंची है। नग्राम के पास दक्षिणी-पूर्वी सिरे पर भूमि ३७२ फुट ऊंची है। इस प्रकार प्रति मील में भूमि का ढाल १ फुट से कम है। गोमती और सई इस जिले की दो बड़ी नदियां हैं। गोमती नदी पीलीभीत जिले में पीलीभीत शहर से ३६ मील पूर्व में निकलती है। ४२ मील टेढ़ी चाल से बहने के बाद यह खीरी जिले में प्रवेश करती है। इसके आगे गोमती दक्षिण की ओर मुड़ती है और सीतापुर और हरदोई ज़िलों के बीच में सीमा बनाती है। फिर यह लखनऊ जिले में प्रवेश करती है। पहले गोमती नदी

महोबा और मलीहाबाद परगनों को अलग करती है। फिर यह रनियामऊ गांव के पास लखनऊ परगने में प्रवेश करती है। लखनऊ शहर के बीच में बहती हुई कुछ दूर तक गोमती लखनऊ और मोहनलालगंज के बीच में सीमा बनाती है। अन्त में सलेमपुर गांव के पास गोमती लखनऊ जिले को छोड़कर बाराबंकी जिले में प्रवेश करती है। गोमती की तली पड़ोस की भूमि से नीची है इसलिये गोमती सिंचाई के काम नहीं आती है। अच्छी भूमि प्रायः गोमती के किनारे से कुछ दूरी पर मिलती है। इससे ऊंचे नीचे किनारे प्रायः रेतीले हैं। कहीं कहीं छोटे छोटे गोले कछार हैं। अधिकतर खादर लखनऊ परगने में है। इनमें प्रायः खरीफ की फसल होती है। कभी कभी रबी की फसल भी होती है। प्रबल वर्षा में तराई पानी में डूब जाती है। ऊंचे किनारों पर बसे हुये गांवों में सिंचाई की सुविधा न होने से खेती नहीं हो पाती है। इस जिले में गोमती की सहायक नदियां छोटी छोटी हैं। बेहटा नदी हरदोई जिले से निकलती है। मलीहाबाद परगने को पार करके कुछ दूर तक यह काकोरी परगने की उत्तरी सीमा बनाती है। कंकराबाद गांव के पास यह गोमती के

दाहिने किनारे पर मिल जाती है। लोनी नदी मोहन लाल गञ्ज परगने में निकलती है। ९ मील कर सलेमपुर के पास यह गोमती में दाहिने किनारे पर मिल जाती है। इनके अतिरिक्त कुछ नाले भी गोमती में मिलते हैं।

सई नदी उन्नाव जिले के मोहन परगने से लखनऊ जिले में प्रवेश करती है। कुछ दूर तक यह जिले की सीमा बनाती है। बिसिंगपुर के पास सई नदी लखनऊ जिले के बाहर हो जाती है। रायबरेली और प्रतापगढ़ जिलों को पार करने के बाद जौनपुर शहर से १८ मील नीचे यह गोमती में मिल जाती है। नगवा नदी बानी के पास सई में मिलती है। बख नदी लखनऊ रेलवे स्टेशन के पास निकलती है। रायबरेली की सीमा पर स्थित बिसिंहपुर गांव के पास यह सई में मिल जाती है।

लखनऊ जिले के अधिकतर भाग का पानी गोमती और सई नदियों और उनकी सहायक नदियों में बह जाता है। कुछ भाग ऐसे नीचे हैं कि उनका पानी किसी नदी में नहीं पहुँच पाता है। वहां झीलें बन गई

हैं। कहीं कहीं ढाक के बन और ऊसर भूमि है। जिले की अधिकतर मिट्टी हलकी दुमट है। इसमें बालू और चिकनी मिट्टी का मिश्रण है। कुछ भागों में भूड़ और मटियार है। जिले की १६ प्रतिशत भूमि खेती के काम नहीं आती है। इसमें कुछ पानी से ढकी है। कुछ घरों सड़कों और रेलों से घिरी हुई है। शेष ऊसर है। जिले में बन का अभाव है। केवल कहीं कहीं ढाक के जंगल मिलते है। इनमें जंगली सुअर, गीदड़ और हिरण पाये जाते हैं। लखनऊ का जिला। अवध के दूसरे जिलों से कुछ अधिक गरम है। फिर भी इलाहाबाद और बुन्देल खंड की अपेक्षा यहां कम गरमी पड़ती है। पेड़ों के कट जाने, पक्की सड़कों और पक्के घरों के बन जाने से लखनऊ शहर जिले के दूसरे स्थानों से अधिक गरम है। कभी कभी तापक्रम ग्रीष्म ऋतु में ११० अंश फारेनहाइट हो जाता है। सरदी में पाला भी पड़ जाता है। गरमी के ऋतु में पश्चिम की ओर से हवायें हैं। तभी धूल भरी आंधियां भी आती हैं। औसत से जिले में ३६ इंच से कुछ कम वर्षा होती है। कभी कभी सुकाल में यहां ७० इञ्च तक वर्षा हुई है। दुर्भिक्ष में केवल १८ इञ्च वर्षा हुई है।

साधारणतः लखनऊ जिले में अच्छी खेती होती है। खरीफ की फसल अधिक प्रसिद्ध है। और अधिक क्षेत्रफल में होती है। खरीफ को २६ फीसदी भूमि में धान होता है। १३ फीसदी भूमि में ज्वार होती है। साधारण खेतों में बाजरा होता है। इनके साथ अरहर, उर्द, मूंग भी बो दी जाती है। कुछ भागों में मकई बोते हैं। रबी की फसल में ३३ फीसदी गेहूँ रहता है। २७ फीसदी खेतों में चना रहता है। जौ कम बोया जाता है। गोमती के किनारे लखनऊ तहसील में गरमी की ऋतु में एक तीसरी फसल भी उगा ली जाती है। इसमें खरबूज़ा, तरबूज़, ककड़ी और तरह तरह की तरकारियां रहती हैं। इस जिले में सिंचाई के अच्छे साधन है। अधिकतर खेत कुओं से सींचे जाते हैं कुछ तालाबों से सींचे जाते हैं। कुछ भागों में नहर से सिंचाई होती है। गाजिउद्दीन हैदर की बनवाई हुई पुरानी नहर सिंचाई के लिये व्यर्थ है। इस नहर द्वारा हरदोई उन्नाव और लखनऊ जिले की भूमि को सीचने का विचार था। नहर द्वारा गङ्गा का पानी गोमती तक पहुँचाने का विचार था। इस योजना को राजा बख्तावर सिंह ने

आरम्भ किया था। पर यह योजना सफल न हो सकी वर्षा ऋतु को छोड़कर नहर की तली प्रायः सूखी रहती है। यह नहर काकोरी के पश्चिम में लखनऊ जिले में प्रवेश करती है। आलमनगर के पास रेलवे लाइन इसे पार करती है। यह लखनऊ शहर के दक्षिण में हैवलाक रोड के समानान्तर चलती है और सिविल लाइन को छावनी से अलग करती है। सुल्तान गंज के दक्षिण में यह गोमती में मिलती है। जिले के कुछ भागों में सारदा नहर से सिंचाई होती है।

लखनऊ जिले में मुसलमान जुलाहे और हिन्दू कोरी कपड़ा बुनने का काम करते हैं। मोहन लाल परगने और दूसरे गांवों में गाढ़ा बहुत बुना जाता है। यह बड़ा मज़बूत और सस्ता होता है। लखनऊ शहर में मोटे से मोटा गाढ़ा और बढ़िया से बढ़िया मलमल बुनने का काम होता है। हसनगंज थाने में मुहम्मद नगर इसका प्रधान केन्द्र है। इस जिले में कपास नहीं होती है। अतः रुई बाहर से आती है। यहां की मलमल में चिकन की कढ़ाई का काम होता है। लेकिन विलायती मलमल ने यहां के जुलाहों को बड़ा धक्का पहुंचाया। दौलतगंज और झांसी टोला में सूती कपड़ा

छापने का काम होता है। बढ़िया छपाई के लिये कपड़े को पानी, तिल्ली के तेल और भेड़ की रेंडी से मलकर तीन सप्ताह तक रखते हैं। एक एक सप्ताह के बाद धोकर धूप में सुखा लिये जाते हैं। फिर इसमें कई रंग मिले हुये पानी में डुबोते हैं। फिर धोकर और सुखा कर छपाई करते हैं। यहां की छींट बड़ी बढ़िया होती है। कपड़े को तरह तरह के रंग में रंगने का काम भी यहां अच्छा होता है। चिकन का काम सूती मलमल या रेशम पर होता है। यह काम उच्च कोटि के थोड़े कारीगरों के हाथ में है। कुछ कारीगर चौक में रहते हैं।

इस काम में परदानशीन स्त्रियों और बच्चों का भी निर्वाह हो जाता है। लखनऊ में सोने और चांदी के तार से कामदानी का भी काम होता है। तार खोखला होता है। बहुत बारीक धागे और सुई को इसके छेद में डालकर मलमल पर इसे सी देते हैं। कामदानी में कारीगर काढ़कर तरह तरह के फूल और फल बना देना हैं। ठीक ठीक और चमकीले भड़कीले रङ्ग से काम की शोभा बढ़ जाती है। प्रायः चांदी की पत्तियों में सोने का फल बनाकर कारीगरी दिखलाई जाती

है। तरह तरह के बेलबूटे भी बनाये जाते हैं। लच्छा कलाबत्तू लैस और गोटे का काम भी होता है। इसमें भी तार की सफाई है। यहां का गोटा बिलायती गोटे से बहुत बढ़िया होता है।

काश्मीरी कारीगरों के आजाने से कुछ दिनों तक लखनऊ में शाल बुनने का काम होता रहा लेकिन अधिकतर कारीगर काश्मीर को लौट गये। इससे शाल बुनने का काम बन्द हो गया। लेकिन रफू का काम फिर भी चलता रहा। ऊनी आसन और जायनमाज़ बनाने का कुछ काम होता है। इस पर तरह तरह के चित्र बने रहते हैं। लखनऊ के सुनार सोने चांदी के बढ़िया आभूषण बनाते हैं। कुछ लोग हुक्का बनाते हैं।

हुक्कों और दूसरे बर्तनों पर मुसलमान कारीगर बिदरी और ज़रबुलन्द का काम भी करते हैं। घटिया धातु पर तार बिठा दिया जाता है और चमका दिया जाता है। कभो कभी इस ढंग से जानवरों के चित्र बना दिये जाते हैं। लखनऊ में खसदान, पानदान, बधना, डेगची, पतीली और दूसरे बर्तन भी बनाये जाते हैं। कुछ मुसलमान कारीगर हड्डी, हाथी दांत के कंघे, कागज़ काटने की छूरी, शतरञ्ज की मुहरें और

इमारतों के नमूने बनाते हैं। बढ़ई लोग बढ़िया कामदार चौकठ मेज़ कुरसी और दूसरी चीज़ें बनाते हैं। शीशम, तून और दूसरी लकड़ी के तरह तरह के रङ्गीन खिलौने भी बनाये जाते हैं। इस जिले में मिट्टी के बर्तन, खिलौने और फल बनाने का काम भी अच्छा होता है। शीशे की बोतलों और चूड़ियां बनाने का काम पहले बहुत होता था। जूता और चमड़े का दूसरा सामान भी बनाया जाता हैं। लखनऊ की बनी हुई तम्बाकू और इत्र भी प्रसिद्ध है।

गोमती के उत्तरी किनारे पर सुलतान गंज में १८७९ में अपर इंडिया कूपर पेपर (कागज) मिल्स स्थापित की गई। शराब बनाने और तेल पेरने का भी काम होता है। चार बाग स्टेशन के पास रेलवे का बड़ा कारखाना है। इनके अतिरिक्त लखनऊ में कई बड़े बड़े छापाखाने हैं।

संक्षिप्त इतिहास—कहते हैं लखनऊ को श्री रामचन्द्र के भाई लक्ष्मण जी ने बसाया था। इसका पुराना नाम लक्ष्मणवती है। मच्छीभवन के पास का ऊंचा टीला

इस समय भी लक्ष्मण टीला कहलाता है। कहते हैं यहां एक ऐसा छेद था जहां से शेषनाग के लिये जल और फूल चढ़ाये जाते थे। कहते हैं रूखरा गांव रूखा से सम्बन्ध रखता है। यह बाणासुर की लड़की थी जो श्रीकृष्ण जी के पौत्र अनुरुद्ध पर आसक्त हो गई थी। अर्जुनपुर को अर्जुन ने बसाया था। नगोहन में पांडव आये थे। सूर्यबंशी राज्य के अन्त में यहां बन हो गया था। इसमें ऋषि और मुनि रहते थे। इन्होंने कई नगर बसाये। मडिआंव मंडल ऋषि ने बसाया था। जागौर को जगदेव योगी ने बसाया था। कहते हैं इन्हें राजा परीक्षित की ओर से यहां भूमि मिली थी। कहते हैं इसी अन्धकार के समय भार, कुरमी और मुराव लोगों ने दुर्गों को बनाकर छोटे छोटे भागों पर शासन करना आरम्भ कर दिया। यह लोग स्वाधीन थे। इनमें बहराइच का भारवंश अधिक बलवान था। इसी वंश के त्रिलोक चन्द ने ९१८ में दिल्ली के विक्रम पाल को हराकर समस्त अवध पर अपना अधिकार कर लिया। १०९३ में गोविन्द चन्द की विधवा रानी भोम देवी ने यह राज्य अपने गुरू हरगोविन्द को सौंप दिया। गुरू के उत्तराधिकारियों ने यहां १४ पीढ़ी तक राज्य किया।

कहते हैं कन्नौज के राजा ने आल्हा और ऊदल को यह भाग जीतने के लिये भेजा था।

कहते हैं महमूद गज़नवी ने अपने भतीजे सैयद-सालार को भी इधर आक्रमण करने के लिये भेजा था। कई नगरों में उसके मरे हुये सैनिकों के मकबरे बने हैं। बाराबंकी के सतरिख में उसका केन्द्र स्थान था। लखनऊ में एक मकबरा सोहबतिया बाग में था। मंडिआंव में नौगजा पोर का मकबरा है। सैयद सालार के मारे जाने से राजपूत अधिकाधिक संख्या में अवध में आने लगे। बैस सर्व प्रथम आये और बैसवाड़े में बस गये। गौतम राजपूतों ने सिसैंडी में अपना अड्डा बनाया। १४०० ईस्वी में मालवा के धारा नगर से पंवार महोना में आये। कहते हैं उन्हीं के साथ सोलंकी आये और मलीहाबाद परगने में बस गये। और मैनपुरी से चौहान आये। कुर्मियों को भगाकर उन्होंने मौली राज्य स्थापित किया। इसी समय चमर गौड़ या अमेठिया राजपूत आये। गहरवार और दूसरे राजपूत भी यहां आकर बस गये।

इसी बीच में १२०२ ई० में मुहम्मद बख्तियार

खिल्जी का आक्रमण हुआ। यह बंगाल की सूबेदारी लेने के लिये अवध के मार्ग से ही गया था। कहते हैं मलीहाबाद के पास बख्तियार नगर को उसी ने बसाया था। यहीं उसने कुछ पठान छोड़ दिये। इसी समय सतरिख से आकर गोमती के उत्तर में ५२ गावों में किदवई शेख बस गये। आगे भी यहां मुसलमान आते रहे। शाहजहां के समय (१६५६) में दिलेर खां ने कुछ पठानों को बख्तियार नगर और गढ़ी संजर खां में बसाया। कुछ पठान शुजाउद्दौला के समय (१७५३) में आये। कुछ हिन्दू मुसलमान हो गये और शेख और पठान बन गये।

लखनऊ शहर में ब्राह्मण और कायस्थ रहते थे। वे लक्षमण टीले के पड़ोस में बसे हुये थे। उनके स्थान पर रामनगर के पठान बसा दिये गये। इनकी ज़मींदारी गोल दरवाजे तक थी। इनके पूर्व (जहां नीम के वृक्षों की अधिकता थी) में शेखों का प्रभुत्व हो गया। इसके घर मच्छी भवन से रेजीडेंसी तक फैले हुये थे। गदर के बाद यह घर गिरा दिये गये। इनमें कई अवध के सूबेदार थे। इनके एक पूर्वज ने यहां एक मजबूत किला उस स्थान पर बनवाया था जहां आगे चलकर मच्छी

भवन बना। कहते हैं इस किले को लिखना नामी एक हिन्दू ने बनाया था। इसलिये इसे किला लिखना कहते थे। जैसे जैसे शेख बढ़े और फले फूले वैसे वैसे शहर भी बढ़ा। पुराने लक्ष्मणपुर नाम के स्थान पर इसका नाम लखनऊ पड़ गया। मुसलमानी शासन के आरम्भ से ही लखनऊ अवध का अंग था। पहले राजधानी अयोध्या में थी। कभी कभी लखनऊ में भी राजधानी रही। १५२६ में हुमायूं ने लखनऊ पर अधिकार कर लिया। आगे चलकर यह सूरी बादशाहों के हाथ में चला गया। यहां उन्होंने तांबे के सिक्के बनाने के लिये टकसाल स्थापित की। १४७८ में यहां शाह मीना नाम के एक फकीर की मृत्यु हुई उसी की स्मृति में एक मुहल्ले का नाम मीना नगर पड़ गया।

अकबर लखनऊ को बहुत पसन्द करता था उसके समय में तांबे के सिक्कों की टकसाल यहां जारी रही। चौक के दक्षिण में कई मुहल्ले बनाये गये। अकबर के समय में भी यहां ब्राह्मण अधिक रहते थे। अकबर ने उनसे वाजपेय यज्ञ करवाया और उन्हें १ लाख रुपया

दक्षिणा में दिया। उस समय से वे लखनऊ में बाजपेयी कहलाने लगे। लेकिन उनका मुहल्ला तोड़ दिया गया। कहते हैं जौनपुर में हारने के बाद हुमायूं यहां चार घंटे ठहरा। इसी बीच में यहां के शेखों ने १००० रुपये और पचास घोड़े इकट्ठे करके हुमायूं को भेंट किये।

अकबर की मृत्यु के बाद लखनऊ का उल्लेख बहुत कम आता है। सादात खां नामी निशापुर के एक ईरानी सौदागर ने सम्राट मुहम्मदशाह को सैयद भाइयों के चंगुल से छुड़ाने में बड़ी सहायता की इससे इस सौदागर की बड़ी उन्नति हुई। १७३८ में वह अवध का सूबेदार बना दिया गया। उसी से अवध के नवाबी वंश का आरम्भ होता है। उसने अयोध्या में किला बनवाया वहीं वह रहने लगा। लेकिन कुछ समय वह लखनऊ में भी रहा। पहले शेखों ने अकबरी दरवाजे में उसका विरोध किया। अतः उसने शहर के बाहर डेरा डाला। दावत के बहाने शेखों को भुलावा देकर वह शहर के भीतर चला गया। शेखान दरवाजे में एक तलवार लटकी रहती थी। इसके सामने सभी नवागंतुकों को

झुकना पड़ता था। सादातखां ने इसे गिरा दिया। इसके बाद उसने किले के भीतर पंच महल को किराये पर लिया। उसने यहां कई कटरे बनाये। सादात खां के बाद उसका भतीजा और दामाद अब्दुल मंसूर खां (सफदर जंग) अवध का नवाब हुआ। लेकिन वह अधिकतर दिल्ली में रहता था। १७५४ में उसकी मृत्यु हुई। मरने से कुछ समय पहले वह अवध में रहने के लिये आया। उसने फैजाबाद में अपनी राजधानी बनाई इससे उसके समय में लखनऊ की अधिक उन्नति न हुई लखनऊ के महल उसके हाथ में अवश्य बने रहे। महलों का किराया न देकर उनके स्वामी शेखों को उसने ७०० एकड़ भूमि दी। उसने पुराने किले को फिर से बनवाया और उसका नाम मच्छी भवन रक्खा। शहर के दक्षिण में बैसवाड़े में बैस राजपूतों को डराने के लिये उसने जलालाबाद का किला बनवाया। उसके मन्त्री नवलराय ने गोमती के ऊपर पत्थर के पुल का बनवाना आरम्भ किया। लेकिन वह उसे पूरा होते न देख सका। वह पहले ही मर गया। १७५४ में जब सफदरजंग की मृत्यु हुई तो उसकी लाश दफन होने के लिये दिल्ली को

भेजी गई। उसका बेटा शुजाउद्दौला अवध का नवाब हुआ। वह अधिकतर फ़ैज़ाबाद में रहा केवल कुछ दिनों वह लखनऊ में रहा। १७७५ में फ़ैज़ाबाद में उसकी मृत्यु हो गई। जब उसका बेटा आसफुद्दौल्ला अवध का नवाब हुआ तब लखनऊ में नयायुग आरम्भ हुआ। उसने फैजाबाद को छोड़कर लखनऊ में अपनी राजधानी बनाई। उसके समय में लखनऊ में नये नये भवन बने। कहते हैं ५२ गांवों की भूमि लखनऊ शहर को बढ़ाने के लिये ले ली गई। उसकी उदारता अवध भर में प्रसिद्ध थी। लोग अब भी कहा करते है 'जिसको न दे मौला तिसको दे आसफुद्दौला।' आसफुद्दौला ने लखनऊ में असंख्य भवन बनवाये और बगीचे लगवाये। किले के पश्चिम में गोमती के किनारे दौलतखाना है। यहीं आसफकोठी या महल है। मच्छी भवन में बड़ा इमामबाड़ा है। रूमी दरवाजा भी उसका बनवाया हुआ है। १७८० में रेज़ीडेंसी बनी। बिबियापुर महल, चिन्हाट (जो आगे चल कर गिरा दिया गया) ऐश, बाग, चारबाग, यहियागंज और अस्तबल उसी के समय में बने। शहर के भीतर वजीरगंज, जमानीगंज, फतेहगंज रकाबगंज, दौलतगंज, बेगमगंज और नखास बने।

अहाता खानसामान, टिकैतगंज और टिकैतराय का बाजार भी उसी के समय में बना। तीरमनिगंज, टीकरी, छावनी हसनुद्दीन खां, हसनगंज, बावली, भवानीगंज, बान्तकगञ्ज, काश्मीरी मुहल्ला, निवासगञ्ज, तहसिनगञ्ज, खुदागञ्ज और अलीगञ्ज, अम्बारगञ्ज, तोप दरवाज़ा और ख्यालीगञ्ज भी बने। वजीरगञ्ज में नवाब के अर्थ-मन्त्री महाराजा झाऊलाल ने झाऊलाल बाजार लगवाया। नवाब के समय में क्लाडी मार्टिन नवाब का प्रिय हो गया वह एक प्रकार से प्रधान मन्त्री था। उसने बहुत सा धन इकट्ठा किया। १८०० ईस्वी में उसकी मृत्यु हो गई। उसने मार्टीनियर बनवाया जहां उसकी कब्र है।

आसफुद्दौला के समय में लखनऊ के दरबार की शोभा अपूर्व थी। अवध प्रान्त समृद्धि के शिखर पर था। उसका एक मात्र उद्देश्य यह था कि भारतवर्ष का कोई दरबार उसके दरबार से शान में आगे न बढ़ने पावे। उसको यह चिन्ता लगी रहती थी कि टीपू के पास कितने हाथी हैं। निजाम के पास कितने मूल्य-

वान हीरे और रत्न है। १८०० में यहां पांच लाख से ऊपर जन-संख्या थी। लेकिन आसफुद्दौला भोग विलास में फंस गया। साधारण लोगों की दशा बिगड़ गई। १७९७ में उसकी मृत्यु हो गई। वह अपने इमाम बाड़े में गाड़ा गया। उसका बेटा वजीर अली नवाब हुआ। उसने केवल ४ महीने तक राज्य किया। इसके बाद सरजान शोर ने उसे गद्दी से उतार दिया और बनारस भेज दिया। आसफुद्दौला का सौतेला भाई सादात अली खां नवाब बनाया गया। सादात अली खां १७-९८ में बनारस से लखनऊ पहुंचा। वह बिबियापुर महल में ठहरा। यहां लार्ड टेनमथ ने बड़ा दरबार किया और फिर शहर में उसका जलूस निकाला गया। सादात अली खां ने १६ वर्ष तक राज्य किया। वह मितव्ययी था। लेकिन उसने लखनऊ को सजाने में खूब खर्च किया। कैसरबाग और दिलकुशा के बीच की प्रधान इमारतें उसी ने बनवाईं। वह फरहत बाग में रहता था। उसने बेलीगार्ड, टेहरी कोठी, लाल बारादरी, दिलाराम और दिलकुशा महल बनवाया। उसी ने हयात बख्श को फिर से बनवाया। नूर बख्श, बेगम की कोठी, कांकरवाली कोठी, दारुश्शफा, खुरशेद मंजिल, चौपड़

अस्तबल, (जहां यूनियन क्लब है) और सिकन्दर बाग उसके समय में बने, इनके अतिरिक्त उसने शहर के पश्चिम में सादातगञ्ज बनवाया। उसी के शासनकाल में रकाबगञ्ज, जंगलीगञ्ज (गणेशगञ्ज थाने में) गोला गञ्ज, मौलवीगञ्ज (वजीरगञ्ज में) और रस्तोगी मुहल्ला चौक में बना। सादात अली खां का पालन पोषण अंग्रेजी समाज में हुआ था। मरने के समय उसने खजाने में १४ करोड़ रुपये छोड़े। १८१४ में उसे जहर दे दिया गया। इससे उसकी मृत्यु हो गई। कैनिंग कालेज के उत्तर-पूर्व के एक इमामबाड़े में वह गाड़ा गया। दूसरा इमामबाड़ा उसकी बेगम खुरशेद जादी का है। उसका बेटा गाजिउद्दीन अवध का सातवां और अन्तिम नबाव था। १८१६ में लार्ड हेस्टिंग्स ने उससे भेंट की और उसे शाह की उपाधि दी। इसलिये उसके उत्तराधिकारी शाह कहलाने लगे। उसने अपने पिता का आलीशान मकबरा बनवाया। उसी ने मोती महल मुबारक मंज़िल, शाह मंजिल, कदम रसूल और विलायत बाग बनवाया। उसी ने अपने नाम की नहर आरम्भ की। गोमती के उत्तर में उसने बादशाहगञ्ज बसाया।

उसके शासनकाल में मेहदीगञ्ज सादातगञ्ज थाने में बना। उसी समय उसके मन्त्री ने ड्योढ़ी आगामीर सराय आगामीर और करबला बनवाया। १८२७ में वह मर गया और अपने बनवाये हुये शाहनजफ (मकबरे) में गाड़ा गया। उसका बेटा नसीरुद्दीन हैदराबाद का शाह बना। उसने १० वर्ष तक राज्य किया। उसने तारावाली कोठी तारों के देखने के लिये (वेधशाला) बनवाई। यहां उसने तरह तरह के यन्त्र एकत्रित किये। इरादतगंज में उसने बड़ा करबला बनवाया। यहीं वह गाड़ा गया। उसने गनेशगंज और गोमती के उत्तर में चान्दगंज बसाया। उसके मंत्री रोशनुद्दौला ने अपने नाम का भवन बनवाया जहां कचहरी है। ७ जुलाई को उसे विष दे दिया गया और उसकी मृत्यु हो गई। उसका चाचा मुहम्मद अलीशाह (सादात अली खां का भाई) बादशाह हुआ। बादशाह बेगम ने मुन्ना जान को गद्दी पर बिठाने की कोशिश की। वे दोनों नज़रबंद करके चुनार को निकाल दिये गये। १८४२ में मुहम्मद अली शाह की मृत्यु हो गई। वह अपने इमामबाड़े में गाड़ा गया। उसने हुसेनाबाद का इमाम-बाड़ा और जामा मस्जिद को बनवाया। उसी ने सत-

खंडा (सातखंड या मंज़िल) बुर्ज़ का बनवाना आरम्भ किया था। गोलीगंज के पूर्व में हकीम मेंहदी अली का मक़बरा भी उसी के समय में बना। उसका बेटा अमजद अलीशाह गद्दी पर बैठा। उसने पांच वर्ष तक राज्य किया। अमजद अलीशाह ने कानपुर के लिये वर्तमान सड़क बनवाई। उसने गोमती के ऊपर लोहे का पुल बनवाया। उसके मन्त्री अमीनुद्दौला ने अमीनाबाद का बाज़ार और उसने हजरतगंज बनवाया। हजरतगंज में ही उसका मक़बरा बना। कानपुर की सड़क पर शहर के बीच में उसने बड़ी सराय बनवाई। फरवरी १८४७ में उसकी मृत्यु हो गई। उसका बेटा वाजिद-अलीशाह अन्तिम बादशाह हुआ। उसने कैसर बाग का महल (१८४८-५० में) बनवाया। उसने कुछ ही वर्ष राज्य किया। कुप्रबन्ध का अपराध लगाकर फरवरी १८५६ में ब्रिटिश सरकार ने उसे लखनऊ की बादशाहत से सदा के लिये हटा दिया और नज़रबन्द करके कलकत्ते को भेज दिया। यहां वह मई महीने में पहुँचा। चार महीने के बाद सितम्बर में उसकी मृत्यु हो गई। उस समय लखनऊ भारतवर्ष के अत्यन्त समृद्धि शाली

नगरों में से एक था। बीच वाला भाग घना बसा था। लखनऊ की सड़कों पर घुड़सवार सोने के किनारों वाले मखमली कपड़े पहन कर लगातार इधर उधर जाते थे। इनके पीछे इनके नौकर सोने और चांदी की मढ़ी हुई लाठी, सोने चांदी की मूठ वाली तलवार भाले और गदा लेकर चलते थे। अमीर लोग सुनहली और रंगीन पालकियों में बैठकर भीड़ के बीच में होकर जाते थे। उनके पीछे सशस्त्र सिपाही रहते थे। कभी कभी उनके पीछे घुड़सवार रहते थे। कुछ लोग चांदी के बने हुये बढ़िया कामदार हौदे के बीच में हाथियों पर सवार होकर निकलते थे। इनके अनुचर भारत के सभी भागों से आते थे। इनकी पोशाकें अलग अलग रहती थीं। इस प्रकार की भीड़ से भरी हुई लखनऊ की सड़कें नवाबी काल में बड़ी सुन्दर मालूम होती थीं। अठारहवीं सदी के अन्तिम चरण में अवध के राज्य में अवध के अतिरिक्त रुहेलखंड, इलाहाबाद, कानपुर और ग़ाज़ीपुर भी शामिल थे। इनकी सब सूबों में बड़ी सेनायें थीं। ईस्टइंडिया कम्पिनी ने इन सेनाओं से मरहठों की बाढ़ को रोकने में सहायता ली।

देश दर्शन

१८५७ में गदर के प्रथम चिन्ह दिखाई दिये। जब चीफ कमिश्नर गाड़ी पर सवार होकर जा रहा था उसके ऊपर मिट्टी का एक ढेला फेंका गया। दूसरी मई को अवध के सिपाहियों ने नये (चरबी लगे हुये) कारतूसों को छूने से इनकार कर दिया। दूसरे दिन इन सिपाहियों से परेड कराई गई। तोपों को लिये हुये अँग्रेज़ सिपाही उनके सामने थे। तोपों को देखकर आधे सिपाही हथियार फेंक कर भाग गये। ११ मई को उसने दरबार किया। इसके साथ ही उसने मच्छी भवन और रेज़ीडेंसी में मज़बूत क़िलेबन्दी की। १८ मई को उसे सब सैनिक अधिकार मिल गये। ३० मई को वास्तव में गदर आरम्भ हुआ। इस दिन देशी सिपाहियों ने मंडिआव छावनी के बंगले जलाये और दो तीन अंग्रेज़ अफसरों को मार डाला। 'इसी शाम को शहर में विद्रोह किया। लेकिन पुलिस ने विद्रोहियों को दबा दिया। इस पर हेनरी रेज़ीडेन्सी में चले गये। ४ जून को सीतापुर के विद्रोहियों की खबर आई। पचास सिपाही रेज़ीडेन्सी के दो स्थानों पर और मच्छी भवन में नियत कर

दिये गये और लम्बे घेरे की तयारी की गई। दो दिन के बाद कानपुर में विद्रोह हुआ। फिर तो विद्रोह की लहर समस्त अवध में फैल गई। २६ जून को विद्रोहियों ने चिन्हाट ले लिया। ३१ जून से रेजीडेंसी का घेरा आरम्भ हुआ। उसी रात को कर्नल पामर ने मच्छी भवन को खाली करके उड़ा। दिया सिपाही रेजीडेंसी में भेज दिये गये। इस समय लखनऊ में १००८ ब्रिटिश अफसर और सिपाही थे। कुछ ईसाई स्त्रियां और बच्चे थे। रेज़ीडेंसी में घिरे हुये व्यक्तियों की संख्या ३००० थी। दूसरी जुलाई को सर हेनरी लारेंस बुरी तरह घायल हुआ। ४ जुलाई को वह मर गया। मेज़र बैंक्स लखनऊ के चीफ कमिश्नर हुये। कुछ दिनों में वे भी मार डाले गये। जनरल इंगलिस प्रधान सेनाध्यक्ष चुने गये। विद्रोहियों ने रेज़ीडेंसी पर गोलेबारी जारी रक्खी ७ जुलाई को जोहान्स के घर पर धावा बोला गया। घर का कुछ भाग उड़ा दिया गया। दो दिन के बाद बहुत से विद्रोही मारे गये। १७ जुलाई को विद्रोही हटा दिये गये। २१ जुलाई को कानपुर से हैवलाक का पत्र आया। १० अगस्त को विद्रोहियों ने दोपहर के ग्यारह बजे से आधी रात तक रेज़ीडेंसी पर गोलियों की बौछार

की फिर वे पीछे हट आये। १८ अगस्त को विद्रोहियों ने बारूद भर कर सिक्खों के हाते में सुरंग लगा दी। ५ सितम्बर को विद्रोहियों ने रेज़ीडेंसी पर फिर छापा मारने का प्रयत्न किया। १४ सितम्बर को कैप्टेन फुल्टन मारा गया। रेज़ीडेंसी की इमारत गोलियों की बौछार से जर्जर हो चुकी थी। भोजन भी कम हो रहा था। २० सितम्बर को जनरल आउट्रम कानपुर में गंगा को पार करके लखनऊ की ओर बढ़ा। २३ सितम्बर को उसकी तोपों के गोलों का शब्द सुनाई दिया। २५ सितम्बर को हैवलाक और आउट्रम की सेनायें रेज़ीडेंसी में पहुँच गई। इनकी सेनाओं ने २२ सितम्बर को लखनऊ जिले में सई नदी को बानी के पुल से पार करके लखनऊ जिले में प्रवेश किया था। २३ सितम्बर को आलमबाग की लड़ाई हुई। २५ मई को चाल पुल को पार करके अँग्रेज़ी सेना, चक्करदार मार्ग से मोती महल में पहुँच गई। यहां कैसर बाग और खुरशेद मंजिल से उनके ऊपर गोलियों की बौछार होने लगी। लेकिन कुछ समय में विद्रोहियों की तोपें शान्त हो गई। यहीं कैसर बाग में जनरल नेल की मृत्यु हो गई। लेकिन

अँग्रेज़ी सेना छतर मंजिल और बेलीगार्ड होती हुई रेज़ीडेंसी में पहुँच गई। इस प्रयास में हैवलाक की छोटी सेना के ११९ सिपाही मारे गये। कुल ३३९ मारे गये और ७७ का पता न लगा। २७ सितम्बर को विद्रोहियों ने रेज़ीडेंसी को फिर घेर लिया विद्रोहियों का हानि हुई। लेकिन लोहे के पुल के पास वे डटे रहे। २६ अक्तूबर से रेज़ीडेंसी के भीतर घिरे हुये लोगों को कम भोजन दिया जाने लगा जिससे घिरे हुये सब लोग एक मास तक भोजन पा सकें। ७ अक्तूबर को २०० सिपाही कानपुर मेजर विषम के साथ आये। कुछ सेना कालिन कैम्पबेल के साथ आई। कावनाग हिन्दुस्तानी भेष बना कर लखनऊ में आ पहुँचा। १३ नवम्बर को सहायता देने वाली सेना आलमबाग में आ पहुँची। दूसरे दिन इसने दिलकुशा और मार्टिनियर पर अधिकार कर लिया। दूसरे दिन सिकन्दर बाग में २००० विद्रोही नष्ट कर दिये गये। यहां से ब्रिगेडियर होप शाह नजफ के मार्ग से रेज़ीडेंसी की ओर बढ़ा। शाहनजफ में रात्रि को छापा मारा गया। दूसरे दिन कदमरसूल भी ले लिया गया। १७ नवम्बर को खुरशेद मंजिल और मोती महल छीन लिये गये। १८ नवम्बर को दिन भर

लड़ाई होती रही। कैसर बाग में विद्रोहियों का अड्डा था। यहां ज़ोर से गोलाबारी की गई। २४ नवम्बर को सर हेनरी हेवलाक की मृत्यु हो गई। वह आलम बाग में गाड़ा गया। सरजेम्स आउट्रम वहां का सेनापति बना। लेकिन वह एक प्रकार से बन्दी बना रहा। पहले वह रेज़ीडेंसी में घिर गया। इसके बाद वह आलम बाग में घेर लिया गया। १८५८ की दूसरी अप्रैल तक वह इसी प्रकार घिरा रहा। उसके ६०० सिपाही आलम बाग और जलालाबाद के क़िलों की रक्षा कर रहे थे। कुछ सिपाही बानी में कानपुर सड़क की रक्षा के लिये रख लिये गये। कुछ सिपाही हर पन्द्रहवें दिन सामान के साथ भेजने पड़ते थे। इस प्रकार विद्रोहियों से मोर्चा लेने के लिये उसके पास २००० से कुछ अधिक सिपाही शेष बचे। विद्रोही पहले कुछ दब गये थे। लेकिन अंग्रेजी सेना को शिथिल देखकर २२ दिसम्बर को विद्रोहियों ने एक सेना दिलकुशा के आगे गुइली गांव में भेजी। यहां उनकी हार हुई। उनकी ४ तोपें छिन गईं। १२ जनवरी को विद्रोहियों ने फिर आक्रमण किया। इस बार भी उन्हें पीछे हटना पड़ा। इसके

बाद विद्रोहियों ने कई बार आक्रमण किया लेकिन उन्हें कोई लाभ न हुआ। २८ फर्वरी को कालिन कैम्पबेल आगया। दूसरी मार्च को उसने दिलकुशा और मुहम्मदबाग ले लिया। ४ मार्च को, कैम्पबेल बिबियापुर कोठी में चला गया। उसी रात को गोमती पर पुल बना लिया गया। ५ चार्च को जनरल फ्रैंक्स सुल्तानपुर से आगया। कुछ सेनायें दूसरे स्थानों से पहले ही आचुकी थीं। इस प्रकार इस समय अंग्रेज़ी सेना में २५,६६४ सिपाही और १६४ तोपें हो गईं। मार्टीनियर और बादशाह बाग ले लिया गया। १० मार्च को बैंक की कोठी पर चढ़ाई हुई। यहां से बेगम की कोठी और हज़रतगंज पर आक्रमण हुआ। दिलाराय भी ले लिया गया। इसी दिन महाराजा जंगबहादुर ८००० गुरखा सिपाहियों के साथ आ पहुंचा। ११ मार्च को सिक्ख और स्काट सिपाहियों ने बेगम की कोठी पर चढ़ाई की। इसमें अंग्रेज़ों को भारी हानि उठानी पड़ी। इसी दिन शाहनजफ (जो खाली होगया था) और सिकंदर बाग पर सेना ने अधिकार कर लिया। इसी दिन आउट्रम ने लोहे के पुल पर अधिकार कर लिया और पत्थर के पुल पर चढ़ाई की। पत्थर के पुल पर विद्रोही

अधिक प्रबल थे। इसलिये उसको लेने का विचार छोड़ दिया गया। १२ और १३ मार्च को अंग्रेज़ी सेना बेगम की कोठी के आगे इमाम बाड़े की ओर बढ़ी। कुछ भारी तोपों से शहर पर गोले छोड़े गये। १४ मार्च को सिक्खों और गोरों ने इमामबाड़ा ले लिया। इसके बाद कैसर बाग, खुरशेद मंज़िल, तारा कोठी, मोतीमहल और छतर मंज़िल पर ब्रिटिश सेना ने तेज़ी के साथ अधिकार कर लिया। दूसरे दिन कैसर बाग के भिन्न-भिन्न भागों में लड़ाई हुई और विद्रोही वहां से भगा दिये गये। अधिकतर विद्रोही लखनऊ को छोड़कर बाहर चले गये। भागे हुये विद्रोहियों से मोर्चा लेने के लिये जनरल ग्रांट सीतापुर की सड़क और जनरल कैम्पबेल संडीला की ओर बढ़े। १६ मार्च को आउट्रम ने विद्रोहियों को रेज़ीडेंसी से भगा दिया। विद्रोहियों ने मच्छी-भवन खाली कर दिया और बड़े इमामबाड़े पर अधिकार कर लिया गया। हुसेनाबाद पर बिना लड़े ही अंग्रेज़ी सेना का अधिकार हो गया। गुरखों ने चार बाग पर और कानपुर की सड़क पर अधिकार कर लिया। गुरखों पर आक्रमण करने वाले विद्रोही भगा

दिये गये उनकी तोपें छीन ली गईं। लखनऊ शहर के उत्तर-पश्चिम में अब केवल मूसाबाग विद्रोहियों के हाथ में था। १९ मार्च को आउट्रम ने उसे भी ले लिया। विद्रोही लखनऊ के बाहर चले गये। उनका पीछा करने के लिये घुड़सवार भेजे गये। इसी बीच में फैज़ाबाद का मौलवी २ तोपों और फक्कड़ सिपाहियों की सहायता से शहर के बीच में एक किलेबन्द इमारत में आ डटा। भीषण लड़ाई के बाद सिक्खों और गोरों ने उसे वहां से निकाल दिया। इस प्रकार १८५८ के अप्रैल मास में अंग्रेज़ों का लखनऊ पर फिर अधिकार हो गया। अब लखनऊ से अंग्रेज़ी सेना आज़मगढ़ बाराबंकी और दूसरे स्थानों को शान्ति स्थापित करने के लिये जाने लगी। मोहनलाल गंज में शेख मुसाहिब अली अन्त तक विद्रोही बना रहा। उसकी धौरहरा जागीर जब्त कर ली गई। सलेमपुर की लड़ाई में मुसाहिब अली और कुरमी विद्रोही नेता खुशाल चन्द लड़ाई में मारे गये।

मलीहाबाद में फकीर लकड़शाह ने कुछ समय तक विद्रोह जारी रक्खा अन्त में वह भगा दिया गया। इस प्रकार लखनऊ जिले में विद्रोह समाप्त हो गया।

१९२० में नखनऊ में काउंसिल भवन बना और

कुछ अंश में स्वायत्तशासन का आरम्भ हुआ। बंदरिया बाग में मन्त्रियों के बंगले हैं। अमीनागंज के बाज़ार को आसफुद्दौला ने बनोगा गांव में लगवाया था। यह मोहना से ४ मील दूर है। रूहेले पर आक्रमण करने के समय नवाब ने दूसरा अमानीगंज मलीहाबाद में बसाया। नवाबी समय में यह लखनऊ से बिसवां और खैराबाद को जानेवाली सड़क पर पड़ता था। यहां अनाज और कपड़े का व्यापार होता है। बनोगा-गांव के पड़ोस में पहले बन था। इसी से यह नाम पड़ा। गांव में प्राइमरी स्कूल है।

अमौसी लखनऊ से कानपुर को जाने वाली पक्की सड़क और रेलवे लाइन के बीच में लखनऊ से ७ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। रेलवे स्टेशन आधमील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहां एक स्कूल है। यह गांव चौहानों का केन्द्र है। गांव के उत्तर में कई बड़ी झीलें हैं। मटियार के बीच में ऊसर भूमि है। चौहानों का नेता बिनायक बाबा पन्द्रहवीं शताब्दी में यहां आया था। कहते हैं अकबर के समय में चौहानों ने बिजनौर

के एक पीर जादे को मार डाला। इससे इनकी कुछ भूमि छीन ली गई और शेखों को दे दी गई।

अमेठो का प्राचीन गांव लखनऊ से सुल्तानपुर को जानेवाली सड़क से पूर्व में लखनऊ से १७ मील दूर है। गांव ऊंचे ऊंचे पेड़ों के बीच में घिरा है। यहां सप्ताह में चार बार बाज़ार लगते हैं। पड़ोस के बुने हुये गाढ़े की बड़ी बिक्री होती है। चमड़े का भी व्यापार होता है। पहले यहां भार लोगों का अधिकार था। महमूद गज़नवी के भतीजे ने यहां आक्रमण किया। फिर यहां राजा डींगर की अध्यक्षता में गौड़ों का अधिकार हो गया। १५५० से फिर यहां मुसलमान प्रबल हो गये। किसी हिन्दू ने यहां मन्दिर बनाने का साहस न किया। वाजिदअली के शासन काल में अमेठी का एक मौलवी अयोध्या की हनूमान गढ़ी को जीतने के लिये एक सेना ले गया। जब वाजिद अलीशाह की सेना ने उसे रोका तब वह न माना और मार डाला गया। अमेठी में कई मुसलमान पीरों के मक़बरे हैं।

बढ़ौली गांव सलेमपुर से २ मील दक्षिण की ओर है। गदर में यहां के कुरमी विद्रोही हो गये थे। इससे

यह गांव उनसे छीन लिया गया। यहां प्राइमरी स्कूल और बाज़ार है।

बख्शी का तालाब लखनऊ से सीतापुर को जाने वाली सड़क पर लखनऊ से ८ मील उत्तर की ओर है। कहते हैं नसीरुद्दीन हैदर के बख्सी तिपुर चन्द ने यहां एक पक्का तालाब बनवाया था। इसी से इसका यह नाम पड़ा। तालाब के चारों ओर पानी तक पक्के घाट बने हैं। कोनों पर बुर्ज हैं। सड़क के सामने बांके बिहारी का मन्दिर है। लखनऊ से सीतापुर और बरेली को जानेवाली रेलवे लाइन का यह एक स्टेशन है। यहां डाकखाना, प्राइमरी स्कूल और फौजी पड़ाव है।

बख्तियार नगर मलीहाबाद से मिला हुआ है। यहां अमनाज़ई पठानों का अड्डा है। १६५६ में वे गढ़ी संसर खां में बस गये थे। १६६३ में उनका एक वंशज सरमस्त खां यहां चला आया। उसका बेटा दिलवर खां दिल्ली के बादशाह फर्रुखसियर का एक मंसबदार हो गया। वीरता और स्वामिभक्ति के कारण उसे नवाब शमशेर खां की उपाधि और ३ लाख रु० वार्षिक आय की जागीर मिली। नवाब सफदर जंग के समय

में इस परिवार पर संकट आया। फर्रुखाबाद के नवाब से मिल जाने के कारण कई गांव जब्त कर लिये गये। लेकिन बख्तियार नगर लौटा दिया। यहां प्राइमरी स्कूल और बाज़ार है।

बंथरा सिकन्दरपुर लखनऊ से कानपुर को जानेवाली सड़क पर लखनऊ से १२ मील और बनीपुल से ४ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। उत्तर की ओर थाना, डाकखाना और पड़ाव है। दक्षिण की ओर बुधवार और शनिवार को बाजार लगता है। पशुओं (ढोरों) की बिक्री होती है।

भौली गांव लखनऊ से ८ मील उत्तर और रूहेलखंड कमायूं रेलवे की बख्शी तालाब स्टेशन से २ मील पश्चिम की ओर है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दोबार बाज़ार लगता है।

बिजनौर कस्बा लखनऊ शहर से ३ मील दक्षिण को ओर है। कानपुर को जानेवाली पक्की सड़क से यह २ मील पूर्व की ओर है। एक कच्ची सड़क लखनऊ से जेल और जलालाबाद के किले के पास होती हुई बिजनौर और सिरोढी को गई है। पूर्व की ओर कई बड़ी झीलें है जिनसे बख नदी निकलती है। यहां गाढ़ा

अच्छा बुना जाता है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। पशुओं की भी बिक्री होती है। यहां एक बड़ा प्राइमरी स्कूल है। कहते हैं इसे बिजली राजा नाम के पासी ने बसाया था। इसके पड़ोस में कई मुसलमानी मकबरों के खंडहर हैं। चिन्हाट लखनऊ से फैजाबाद को जाने वाली पक्की सड़क पर लखनऊ से ६ मील दूर है। एक सड़क गाजिउद्दीन हैदर के बनवाये हुये रफातगंज बाज़ार में होकर सतरिख को गई। जहां नवाबी समय में कोतवाल का निवास स्थान था वहां आजकल स्कूल है। कहते हैं पहले यहां चनाहाट था। इसी से बिगड़ कर चिन्हाट नाम पड़ा। यहां मीरन पहलवान की दरगाह है। जेठ में यहां उर्स का मेला होता है। गदर के समय में यहां सरहेनरी लारेन्स की सेना की हार हुई थी। यहां से पीछे हट कर सेना ने रेज़ीडेंसी में शरण ली थी। यहां ११२ अँग्रेज़ और बहुत से देशी सिपाही मारे गये थे। अँग्रेज़ों की ४ तोपें भी छिन गई थीं।

गुसाईगंज का बाज़ार लखनऊ और सुल्तानपुर की सड़क पर स्थित है। यह लखनऊ से १४ मील और मोहनलाल गंज (तहसील) से ८ मील दूर है। सप्ताह

में दो बार बाज़ार लगता है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। थाने के सामने पुराने क़िले के खंडहर हैं। शुजाउद्दौला के समय में राजा हिम्मत गिर गुसाईं का यह किला बड़ा दृढ़ था। राजा के पास १०० नागा घुड़ सवार रहते थे।

इटौंजा लखनऊ से सीतापुर को जाने वाली सड़क के पूर्व में लखनऊ से ८ मील उत्तर की ओर है। यहां थाना, डाकखाना, रेलवे स्टेशन है। बाज़ार सोमवार और शुक्रवार को लगता है। मार्च में शिवबाराह का और क्वांर में रामलीला का मेला लगता है।

जिन्दौर मलीहाबाद से ७ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। इसमें कई छोटे गांव मिले है। इनमें दो बेहरा नदी के किनारे स्थित हैं। यह छोटो नदी गरमी में सूख जाती है। लेकिन वर्षा में उमड़ कर खरीफ की फसल को नष्ट कर देती है। रहीमाबाद में सोमवार को और बक्की नगर में बृहस्पतिवार को बाजार लगता है। रहीमाबाद अवधरुहेल खंड (ईस्टइंडियन) रेलवे का स्टेशन है। वास्तव में स्टेशन तरौना गांव में है जो १ मील उत्तर की ओर है। कहते हैं यह गांव बड़ा पुराना है। गदर में यहां

के लोगों ने प्रसिद्ध विद्रोही लक्कड़ शाह के विरुद्ध अंग्रेज़ों की बड़ी सहायता की थी।

जुगौर पूर्वी सिरे पर लखनऊ से बाराबंकी और फैजाबाद को जाने वाली सड़क से २ मील दक्षिण की ओर है। कुछ दूर उत्तर की ओर रेलवे स्टेशन है। यहां एक स्कूल है। कहते हैं जोगी जगदेव ने इसे बसाया था। मुसलमानों ने इसे भारों से लिया था। कहते हैं सुल्तान रज़िया ने यहां के मुसलमानों को एक फरमान द्वारा ५४ गांवों को ज़मींदारी दी थी। यहां कई मुसलमानी मकबरे हैं।

काकोरी कस्बा लखनऊ से ८ मील पश्चिम में लखनऊ से मलीहाबाद को जाने वाली सड़क पर स्थित है। रेलवे स्टेशन पास ही है। यहां थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है। रेलवे ट्रेन के खज़ाने को लूटने की दुर्घटना यहीं हुई थी। यह स्थान बड़ा पुराना है। यहां भार लोगों का काकोरगढ़ (किला) था बैस राजपूतों ने इसे जीत लिया। फिर यहां मुसलमानों के आक्रमण हुये। यहां कई मुसलमानी मकबरे हैं।

लखनऊ जिले का केन्द्र स्थान और अवध तथा

लखनऊ—दर्शन

एक प्रकार से संयुक्तप्रान्त की राजधानी है। इसका अधिकतर भाग गोमती नदी के दक्षिणी किनारे पर बसा है। कुछ भाग उत्तरी किनारे पर है। दोनों के बीच में कई पुल हैं। यह कलकत्ते से ६१० मील, बनारस से १६६ मील, कानपुर से ४२ मील और इलाहाबाद से १४० मील दूर है। यह समुद्र-तल से ४०३ फुट ऊंचा है। दूर से देखने पर लखनऊ बड़ा सुहावना शहर मालूम होता है। लखनऊ में नवाबी समय की कई इमारतें हैं। गदर के बाद कुछ इमारतें तोड़ दी गईं और फौजी काम की कई चौड़ी सड़कें शहर के बीच से निकाली गईं। दूसरी सड़कें भी चौड़ी कर दी गईं। रेज़ीडेन्सी गोमती से ३०० गज़ दूर है। इसे आसफुद्दौला ने ऊंचे स्थान पर १७८० ईस्वी में बनवाया था। गदर में पांच महीने तक गोलियों की बौछार से यह जर्जर हो गई।

बड़ा इमामबाड़ा भी मज़बूत बना है। लखनऊ पर दूसरी बार अधिकार हो जाने पर कुछ समय तक यहां तोप घर और बारूदघर रहा। यह मच्छी भवन के पड़ोस में सड़क से पश्चिम की ओर है। चालीसा अकाल से पीड़ित लोगों को सहायता देने की दृष्टि से

आसफुद्दौला ने १७८४ में इसे बनवाया था। कहते हैं अकाल से पीड़ित शहर के प्रतिष्ठित लोगों ने भी यहां मजदूरों का काम किया था। उनकी प्रतिष्ठा रखने के लिये उनको रात्रि में मजदूरी दी जाती थी और उनके नाम छोड़ दिये जाते थे। इसमें एक विशाल कमरा १६२ फुट लम्बा और ५३½ फुट चौड़ा है। इसके दो ओर बराम्दा है। प्रत्येक सिरे पर ५३ फुट व्यासवाली अष्टभुज है। इसके नीचे कई फुट मोटे छोटे छोटे तह-खाने या अभ्यन्तर गृह हैं। पहले इसकी दीवारों पर जो बढ़िया कारीगरी और सजावट थी वह नष्ट हो गई। कुछ समय तक यहां अंग्रेज़ी तोप खाने की गोदाम रही। इसके बनाने में १० लाख रुपये खर्च हुये। आसफुद्दौला की कब्र यहीं बनी है।

लखनऊ शहर छः भागों में बटा है। मच्छी भवन के दक्षिण-पश्चिम में चौक है। उत्तर-पश्चिम में दौलत-गंज है। दक्षिण-पश्चिम की ओर चौक के आगे सादात-गञ्ज है। वजीरगञ्ज मच्छी भवन के दक्षिण में और चौक तथा सादातगंज के पूर्व में है। गणेशगञ्ज दक्षिण-पूर्व की ओर है और चार बाग स्टेशन से अमीनाबाद

के मार्ग में पड़ता है। इसी में हजरतगञ्ज और सिविल लाइन भी शामिल है। हसनगञ्ज गोमती के उत्तर में है। मच्छी भवन लखनऊ के बीच में है। यह गोमती के ऊपर एक बड़ा टीला है। इसी पर पुराना किला बना था। यह लखनऊ का सब से पुराना भाग है। इसे लक्ष्मण टीला भी कहते हैं। श्री रामचन्द्र जी के भाई लक्ष्मण जी ने इस नगर को बसाया था। इसी से इसे लक्ष्मणपुर भी कहते थे। इसी से बिगड़ कर लखनपुर या लखनऊ बना। लखनऊ के शेखों ने लक्ष्मण टीले पर एक दृढ़ किला बनवाया। इसके पड़ोस में ही मुबारक महल और पंच मंज़िले पांच महल में वे रहते थे। लेकिन यह सब इमारतें गिरा दी गईं। जब सादात खां १७३२ में पहले पहल लखनऊ को आया तो उसने इन इमारतों को ५६५ रु० मासिक किराये पर लिया था। पहले कुछ समय तक किराया मिलता रहा। फिर नवाबों ने इन पर अपना अधिकार कर लिया। सफदर जंग ने पुराने किले को फिर से बनवाया। इसके बाद इसका नाम मच्छी भवन पड़ गया। ७००० के मंसबदार की हैसियत से सूबेदार मछली का निशान रखता था। इसी से इसका नाम मच्छी भवन पड़ गया। इसके मन्त्री नवल

राय ने गोमती में कुए गड़वा कर पत्थर का पुल बनवाना आरम्भ किया। लेकिन वह इसे पूरा न देख सका। आसफुद्दौला ने इसे पूरा करवाया। लक्ष्मण टीले के मन्दिर के स्थान पर औरंगजेब ने मस्जिद बनवाई।

लेकिन आसफुद्दौला की मस्जिद सुन्दर इमामबाड़े और रूमी दरवाजे के सामने औरंगजेब की मस्जिद कुछ भी नहीं जंचती है। जब अंग्रेजी सेना ३० जून को रेजीडेन्सी से हट गई तो उसने रात को मच्छीभवन बारूद से उड़ा दिया। दुबारा अधिकार होजाने पर कुछ मरम्मत की गई। लेकिन १८६५ में यह फिर नष्ट कर दिया गया। छतर मंजिल से गोमती के किनारे किनारे हुसेनाबाद को जानेवाली सड़क टीलेको पार करती है। गदर के बाद मच्छी भवन के चारों ओर आध आध मील की दूरी तक स्थान साफ कर दिया गया। इस सफाई में लखनऊ को सब से पुराना बाजपेयी मुहल्ला और इस्माइलगंज मुहल्ला नष्ट कर दिया गया। वर्षों तक चौक और गोमती के बीच में ईंटा कत्तल पड़ा रहा। १८८७ में यहीं पर विक्टोरिया पार्क बना। रेजीडेंसी के आगे गोमती के समीप फरहत बख्श (महल) के खंडहर हैं। इसका एक भाग

छतर मंजिल से मिला हुआ है। इसे जनरल मार्टिन ने बनवाया था। सादातअली खां ने उससे ५०,००० रुपये में मोल ले लिया। इसमें उसने लाला बारादरी या सिंहासन का कमरा और दूसरी इमारतें बनवाईं। लाला बारादरी में प्रान्तीय अजायब घर है जिसमें पुराने सिक्के, पुस्तकें और दूसरी प्राचीन वस्तुयें रक्खी हुई हैं। बारादरी में राज्याभिषेक के अवसर पर अवध का बादशाह यहां सिंहासन पर बैठता था। रेजीडेंट इस अवसर पर उसे भेंट (नजर) देता था। फरहत बख्श से मिली हुई दक्षिण की ओर दो इमारतें दर्शन विलास और गुलिस्ताने ईरान की हैं। दर्शन-विलास में इंजीनियर का दफ्तर है। गुलिस्तानने ईरान का कुछ भाग अजायबघर के काम आता है। इन दोनों इमारतों को गाजिउद्दीन हैदर ने बनवाया था।

इनके आगे छतर मंजिल के दो महल हैं। दोनों ही गोमती के सामने हैं। इनमें से बड़े में यूनाइटेड सर्विस क्लब है। छोटे में खफीफा कचहरी और रजिस्ट्री का दफ्तर है। इन दोनों को गाज़िउद्दीन हैदर ने आरम्भ किया था। उसके बेटे ने उन्हें पूरा किया। बादशाह फरहत बख्श महल में रहता था।

इनमें उसकी बेगमें रहती थीं। छतर मंज़िल के उत्तर में टेढ़ी कोठो है। इसे सादात अली खां ने बनवाया था। आजकल इसमें जूडिशल कमिश्नर का दफ्तर है। दक्षिण की ओर गाज़िउद्दीन हैदर का बनवाया हुआ चीनी बाज़ार खंडहर हो गया है। इसके आगे कैसर बाग है। इसे वाजिद अलीशाह ने १८४८ में आरम्भ किया था। १८५० में यह बनकर पूरा हुआ था।

चीनी बाज़ार के पास ही सादात अली खां और उसकी स्त्री मुर्शिद ज़ादी के मकबरे हैं। उन्हें दोनों की मृत्यु के बाद उसके बेटे गाज़िउद्दीन हैदर ने बनवाया था। आगे हज़रत बाग है। दाहिनी ओर चांदीवाली बारादरी है। इसमें किसी समय चांदी जड़ी थी। यहीं खास मुकाम और बादशाह मंजिल है। बाईं ओर चौलखी इमारतें हैं। कहते हैं इन्हें बादशाह के नाई ने बनवाया था और ४ लाख रुपये में बादशाह के हाथ बेच दिया था। यहीं बादशाह की बेगमें रहा करती थीं। यहीं विद्रोह में सम्मिलित होने वाली बेगम अपना दरबार करती थी, यहीं कुछ अंग्रेज हफ्तों तक कैदी रक्खे गये थे। इसके आगे वह स्थान है जहां वाजिदअली

शाह मेले के अवसर पर पीले कपड़े पहन कर फकीर के भेष में बैठा करता था। वह शहतूत के पेड़ के नीचे संगमरमर के फर्श पर बैठता था। चार पांच गज़ की उंचाई तक पेड़ गहरा लाल रंग दिया जाता था। इससे पेड़ सूख गया। इस समय यह स्थान ट्रेनिंग स्कूल का अंग है। कैसर बाग के पड़ोस में अगस्त के महीने में जोगिया मेला लगता था। पत्थर की बारादरी बलराम पुर महाराज की जायदाद है। कैसर पसन्द इमारतों को नवाब के मन्त्री रोशनुद्दौला ने बनवाया था। वाजिद-अली शाह ने उन्हें जब्त कर लिया और अपनी एक रक्खी हुई स्त्री माशूकस्सुल्तान को दे दिया। इसके निचले भाग में धौरहरा कैदी रक्खे गये थे। यहीं से वे पूर्वी दरवाज़े के पास लाकर कत्ल किये गये थे। शेर दरवाज़े के नोचे जनरल नेल मारा गया था।

कैसर बाग की कुछ इमारतें लार्ड कैनिंग ने तालुके-दारों को इस शर्त पर लौटा दीं कि वे उनको ठीक दशा में रक्खें। जब वे लखनऊ आते हैं तब इन्हीं में रहते हैं।

कैसर बाग के उत्तर-पश्चिम में विशाल और सुन्दर रोशनुद्दौला कोठी है। आजकल यहां जिले की कचहरी

है। इसे भी शाह नसीरुद्दीन के मन्त्री ने बनवाया था। कैसर बाग के पूर्व में महल और गोमती नदी के बीच में तारावाली कोठी या वेधशाला है। गदर में ज्योतिष के अध्ययन में सहायता देनेवाले यन्त्र लुप्त हो गये। इसमें इस समय बैंक आफ बंगाल हैं। १८५७ में फैजाबाद का विद्रोही मौलवी अहमदुल्ला शाह या डंका-शाह यहीं रहता था। वह चलने के पहले अपने आगे ढोल या डंका बजवाता था इसलिये उसे डंकाशाह कहते थे। यहीं विद्रोही नेता सभा किया करते थे।

खुरशेद मंजिल तारावाली कोठी के पास है। इसे सादातअली खां ने बनवाया था। अपनी स्त्री की स्मृति में उसने इसका नाम खुरशेद मंजिल रक्खा। उसके बेटे ने इसे पूरा किया। यह एक किले के रूप में बनी है। इसके चारों ओर चार गज़ चौड़ी खाई बनी है। गदर में अंग्रेज़ी सेनापतियों का यहां अड्डा रहा। इस समय यहां लड़कियों का स्कूल है।

खुरशेद मंजिल के उत्तर में गोमती के किनारे मोती महल है। इसका गुम्बद मोती के समान है। इसलिये इसे मोती महल कहते हैं। मोती महल की प्रधान इमारत

सादात अली खां ने बनवाई थी। मुबारक मंज़िल और शाह मंजिल को गाज़ीउद्दीन हैदर ने बनवाया था। इसी के घेरे में चीते और दूसरे जंगली जानवरों की लड़ाइयां होती थीं। लेकिन हाथी और गैंडे की लड़ाई गोमती के दूसरे किनारे वाले हजारी बाग के घेरे में होती थी। भीड़ के पास इनका लड़ना भयंकर था। गदर में यहां कई अंग्रेज़ मारे गये थे। इस समय यह बलरामपुर महाराज की जायदाद है। मोती महल के पूर्व में शाह नजफ है। इसी में इसके बनवाने वाले गाज़िउद्दीन हैदर, उसकी स्त्री और शाहीवंश के मकबरे हैं। नजफ का अर्थ पहाड़ी है। यह अली के मकबरे की नकल है और टीले पर बना है। मुहर्रम और शाह के मृत्युदिवस पर यहां जलसा होता है। गदर में यहां भीषण लड़ाई हुई थी। इसके पास ही कदम रसूल है। इसे गाज़िउद्दीन हैदर ने एक कृत्रिम टीले पर बनवाया था।

एक पत्थर था जिसमें रसूल (मुहम्मद) के कदम (पद) का चिन्ह बना था। गदर के बाद इस पत्थर का पता न लगा। इस समय यह गिरी हुई दशा में है। तारावाली कोठी के सामने उन गोरे सैनिकों के स्मारक हैं जो गदर में मार डाले गये थे। विक्टोरिया पार्क के

पास दौलतगंज में हुसेनाबाद का इमामबाड़ा और जामा मस्जिद है। मस्जिद की दीवारों पर बढ़िया कारीगरी है। हुसेनाबाद ताल के पास घंटाघर है। १८८० ई० में इसका आरम्भ हुआ। १८८७ ई० में यह घंटाघर बन कर पूरा हुआ। इसके बनने में १,१७,००० रुपये लगे। घंटे का वज़न १ टन से ऊपर है। यह घंटाघर २२१ फुट ऊंचा है। इसकी लम्बाई २० फुट और चौड़ाई २० फुट है। इसमें भारतवर्ष में सब से बड़ी घड़ी लगी है। तालाब के पश्चिम में अधूरा सतखंडा है। मुहम्मद अलीशाह केवल चार खंड (मंजिल) बनवा पाया था। इसी बीच में वह मर गया। तालाब के सामने मुहम्मद अली शाह की बनवाई हुई बारादरी है। इसमें लखनऊ के नवाबों के चित्रों का संग्रह है। घंटाघर के उत्तर में दौलतखाना है। इसमें कई इमारतें शामिल हैं। जब आसफुद्दौला ने फैजाबाद से बदल कर यहां राजधानी बनाई तो यही उसका महल था। प्रधान इमारत आसफ कोठी कहलाती है।

दौलतगंज मुहल्ले को आसफुद्दौला ने बनवाया था। यह हुसेनाबाद के उत्तर में है। दक्षिण में सराय माली

खां है। इसे सादात खां ने बनवाया था। तहसीलगंज को आसफुद्दौला के एक मन्त्री ने (जो हिन्दू से मुसलमान हो गया था) बनवाया था। मिरज़ा मंडी की नींव मिर्ज़ा समीम ने (जो आगे चलकर सम्राट जहांगीर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।) डाली थी। रानी कटरा को अवध के सूबेदार गिरधर राय की रानी ने बनवाया। वह इलाहाबाद के सूबेदार छबीले राय का भतीजा था। गढ़ी पीर खां शाहजहां के समय में बसी। शहर के आगे पश्चिम की ओर मूसा बाग है। इसे आसफुद्दौला ने लगवाया था। इसमें जनरल मार्टिन ने सादात अली खां के लिये योरूपीय ढंग का बंगला बनवाया था। यहां जंगली जानवरों की लड़ाइयां हुआ करती थीं। यहां विद्रोह का आरम्भ हुआ था। इस समय यहां खंडहर हैं। इसके पड़ोस में मिर्ज़ा बाग है। इसका यह नाम शाहजादा सलीम के सम्मानार्थ रक्खा गया। दौलतगंज लखनऊ का पुराना मुहल्ला है। पर आजकल यह कुछ खाली सा हो रहा है। लोग पूर्व की ओर बढ़ते जा रहे है। इससे यहां के बड़े घरों का किराया अमीनाबाद की मामूली कोठरियों से कम रह गया है।

चौक के उत्तर में दौलतगंज और दक्षिण में सादातगंज है। पूर्व की ओर यह वजीरगंज तक फैला हुआ है। इसके दक्षिणी या अकबरी दरवाज़े को अवध के सूबेदार के नायब बिलग्राम के काज़ी महमूद ने बनवाया था। उसी ने महमूद नगर और शाहगंज बसाया। शाहजहां के समय में अशरफ अली खां ने अशरफाबाद बनवाया। यह शाहगञ्ज के दक्षिण में नौबस्ता से मिला हुआ है। चौक के चारों ओर बसे हुये कटरी, सोंधी, बंजारी, अहीर टोला (मुहल्ले) अधिक पुराने हैं। अधिक पश्चिम में महबूबगञ्ज है। इसे आसफुद्दौला ने बसाया था। इसके आगे वज़ीर बाग, मुअज़्ज़म नगर, करीमगञ्ज और इकराम नगर है। महबूबगञ्ज और चौक के बीच में कटरा विज़ान बेग खां है। इसे सादात खां ने बनवाया था। उसी ने सैयद हुसेन खां और अबूतुराब खां के कटरे और बाग महानरायन बनवाये। चौक मुहल्ला बहुत घना बसा हुआ है।

सादात शहर के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में स्थित है। यह आलमनगर और पुरानी नहर तक चला गया है। इसके उत्तर में काश्मीरी मुहल्ला है जिसे आसफुद्दौल

ने बसाया था। दक्षिण की ओर ताल कटूरा है। यहां रूई को मिलें और पुराना करबला है। विक्टोरिया-गञ्ज के पूर्व में ऐशबाग है। इसे आसफुद्दौला ने बसाया था। बाज़ार सादात अली खां ने बनवाया था।

वजीरगञ्ज सादातगञ्ज के पूर्व में है। यह कैसर-बाग से दक्षिण की ओर रेलवे स्टेशन तक चला गया है। पूर्व की ओर यह कानपुर सड़क और गणेशगञ्ज तक फैला हुआ है। यहां के बाज़ार का यह नाम आसफुद्दौला ने अपने गोद लिये हुये बेटे वज़ीर अली खां के सम्मानार्थ रक्खा। उत्तरी मुहल्ला ड्योढ़ी आगामीर है। इसे गाज़िउद्दीन हैदर के मन्त्री आगामीर मुतमा-दुद्दौला ने बनवाया था। इसके दक्षिण में राजा बाज़ार, यहियागंज और नवाबगंज हैं। कैनिंग रोड के पूर्व में माशागंज, चिकमंडी, मौलवीगंज और गोलागंज हैं। फतेहगंज अमानीगञ्ज और बेगमगञ्ज आसफुद्दौला के समय में बने। पूर्व में कैसर बाग की ओर बाजार झाऊ लाल है। इसे आसफुद्दौला के अर्थ मन्त्री झाऊ लाल कायस्थ ने बनवाया था। अमीना बाद बाजार और सराय को अमजदअली शाह के मन्त्री अमीनुद्दौला ने

बनवाया था। यहीं लखनऊ के प्रसिद्ध फकीर मीनाशाह का मकबरा है। इसी के प्रोत्साहन से शेख लखनऊ में बस गये थे। गदर में मकबरे का कुछ भाग टूट गया था। फिर इसकी मरम्मत हो ग.। इसके पास ही मेहदी-अली खां का मकबरा है।

वज़ीरगञ्ज के पूर्व में गणेशगञ्ज का मुहल्ला गोमती नदी तक चला गया है। इसी में सिविल लाइन और दूसरे मुहल्ले शामिल हैं। यहां के रकाबगञ्ज, जंगलीगञ्ज और मक़बूलगञ्ज सादातअली खां ने बनवाये थे। हज़रतगञ्ज लखनऊ का प्रसिद्ध मुहल्ला है। यहीं योरुपीय दुकानें, बड़ी इमारते और जनरल पोस्ट आफिस है। सादात अली खां की बनवाई हुई नूरबख्स कोठी में चीफ कमिश्नर का दफ्तर है। सादात अली को कांकर वाली कोठी में सिटी मजिस्ट्रेट रहता है। हज-रतगञ्ज को अमजद अलीशाह ने बसाया था। यहीं उसका मकबरा है। इसे छोटा इमामबाड़ा कहते हैं। गदर में इसकी सजावट की सामग्री लुट गई। हजरत-गञ्ज के दक्षिण में क्राइस्ट चर्च के आगे लाट साहब की कोठी है। सादातअली खां के समय में जनरल मार्टिन

ने इसे बनवाया था। लखनऊ के कमिश्नर मेजर बैंक्स (जो गदर में मार डाला गया) की स्मृति में इसे बैंक्स कोठी भी कहते थे। इसके पूर्व में दारश्शफा (यहां नवाब को बीमारी से आराम मिला था इसलिये इसका यह नाम पड़ा।) और बेगम की कोठी है। बेगम की कोठी में डाकखाना है।

इसके आगे विंगफील्ड पार्क है। विंगफील्ड लखनऊ के एक एक चीफ कमिश्नर थे। कुछ दूर आगे सिकन्दर बाग है। इसी से मिला हुआ सुल्तान बाग है। गदर में यहां भीषण लड़ाई हुई थी।

विंगफील्ड पार्क के दक्षिण-पूर्व में मार्टिनियर है। जो इटेलियन ढंग से बनी हुई है। यहां लड़कियों का मार्टिनियर कालेज है जो भारतवर्ष के पुराने कालिजों में से एक है। गदर में यहां विद्रोहियों का अधिकार हो गया था।

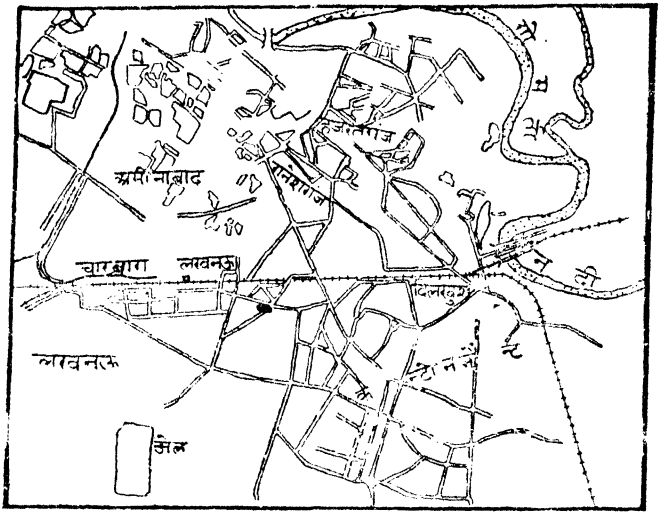
गोमती के उत्तर में हसनगञ्ज है। यह सीतापुर को जानेवाली सड़क के पूर्व में है। यहां आबादी कम है। इसके दक्षिण में मुकरिम नगर और पश्चिम में ठठेरी टोला है। अधिक पश्चिम में बानभंडी और मुराव टोला है। उत्तर में मेहदीगञ्ज और फतेहपुर हैं। हसन-

गञ्ज के पूर्व में चांदगञ्ज है। दक्षिण-पूर्व में नसीरुद्दीन हैदर का लगवाया हुआ बादशाह बाग है। इस समय यह कपूर्थला-महाराज की सम्पत्ति है। यहीं उनका एजेंट कभी कभी रहता है। इसके पूर्व में हैदराबाद है जहां हज़ारी बाग, काल्विन इन्सटट्यूट, पुलिस लाइन और पागलखाना है। अधिक पूर्व में ब्रसगञ्ज और बादशाह नगर है। बादशाह नगर में रेलवे स्टेशन और अपर इण्डिया कूपर पेपर मिल है जो गोमती के किनारे सुल्तानगञ्ज के सामने स्थित है।

शहर के दक्षिण में पुरानी नहर के आगे लखनऊ की छावनी है। छावनी का क्षेत्रफल लगभग दस वर्ग मील है। यह पश्चिम में रायबरेली को जाने वाली सड़क से पूर्व में गोमती तक फैली हुई है। यहां हिन्दुस्तानी और गोरे सिपाही रहते हैं।

दिलकुशा के पूर्व में गोमती के किनारे के पास बिबियापुर कोठी है। इस नाम का गांव पास ही दक्षिण-पूर्व की ओर है। इस दोमंजिला योरूपीय ढंग से इमारत को जनरल मार्टिन ने आसफुद्दौला के लिये बनवाया था। वजीरअली खां को गद्दी से उतारने के

समय सर जान शोर ने यहीं दरबार किया था। फिर उसे नजरबंद करके यहा से बनारस भेजा था।



लखनऊ शहर की स्थिति

बिबियापुर के उत्तर और दिलकुशा के पूर्व में बिलायती बाग है। कहते हैं गाज़िउद्दीन हैदर की गोरी स्त्री के कारण यह नाम पड़ा। यहां कुछ विलायती पेड़ भी लगाये गये थे। वाजिदअली शाह के समय में महल की बेगमें यहां आया करती थीं। इस समय यह उजड़ी हुई हालत में है।

चार बाग रेलवे स्टेशन से डेढ़ मील की दूरी पर राय-बरेली को जानेवाली सड़क पर डिस्ट्रिक्ट जेल है। इससे मिली हुई सेंट्रल जेल है। जेल से १ मील और आगे बख नदी का उद्गम है। सड़क के पश्चिम में जलालाबाद के पुराने किले के खंडहर हैं। जेल के पश्चिम में कानपुर-रोड के पूर्व में आलम बाग है। इसे वाजिदअली शाह ने अपनी बेगम के लिये बनवाया था। गदर में यहां लड़ाई हुई थी।

लखनऊ का चार बाग रेलवे स्टेशन या जंक्शन प्रान्त की सर्वोत्तम स्टेशन है। लखनऊ में यूनिवर्सिटी, मेडिकल कालेज और सेक्रेटेरियट, कांउंसिल भवन भी अपूर्व हैं। माल मलीहाबाद से अतरौली को जाने वाली सड़क पर स्थित है। रामनारायनगञ्ज में गुरुवार और रविवार को बाज़ार लगता है। पशुओं की भी बिक्री होती है। चैत में आठों, जेठ में महाबीर और भादों में जन्माअष्टिमी का मेला लगता है। यह गहरवारों का प्रधान अड्डा है।

मलीहाबाद लखनऊ से पन्द्रह मील की दूरी पर संडीला को जाने वाली सड़क पर स्थित है। उत्तर की

और अवध रुहेलखंड रेलवे लाइन है। स्टेशन १ मील दूर है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना, अस्पताल और मिडिल स्कूल है। मिरजागंज बाज़ार संडीला की सड़क के पास लगता है। मलीहाबाद में तबक और ताज़िया अच्छे बनते हैं। मलीहाबाद में सफेदा आम और बड़े मीठे बेरों के बगीचे भी बहुत हैं। मलीहाबाद से मिला हुआ बख्तियार नगर और गढ़ी संजरखां है।

मंड़िआंव लखनऊ से ४ मील उत्तर की ओर है। लखनऊ से सीतापुर को जाने वाली पक्की सड़क यहां से एक मील दूर है। लखनऊ से बरेली को जाने वाली सड़क को समानान्तर चलती है। स्टेशन मुहीबुल्लापुर में है। गदर से पहले यहां छावनी भी थी। सादात अलीखां की ओर से यहां ईस्टइंडिया कम्पिनी की सेना रहती थी। अफसर बंगलों में रहते थे। देशी सिपाही झोपड़ों में रहते थे। १८५७ की ३० मई को सिपाहियों ने छावनी को लूटा और जला दिया। इसके बाद फिर यहां छावनी नहीं रही। मंड़िआंउ पुराना स्थान है। कहते हैं मंडल ऋषि यहीं रहते थे। यहां कई मुसलमानी मकबरे हैं।

मोहनलालगञ्ज लखनऊ से रायबरेली को जाने वाली सड़क पर लखनऊ से १४ मील दूर है। रेलवे लाइन सड़क की समानान्तर चलती है। स्टेशन उत्तर-पूर्व की ओर है। पास ही बाज़ार है। बाज़ार को राजा काशीप्रसाद ने बनवाया और अपने ससुर मोहनलाल की स्मृति में इसका नाम मोहनलालगञ्ज रक्खा। राजा ने ही एक लाख रुपया लगाकर यहां मन्दिर बनवाया। यह २५० फुट ऊँचा है। भादों में यहां जल विहार का उत्सव होता है। बाज़ार में कपड़े और अनाज का व्यापार होता है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है।

नगराम बाराबंकी के पड़ोस में लखनऊ से १६ मील दूर है। यह नगर बहुत पुराना है। लेकिन उजड़ा है। यहां दो बाज़ार लगते हैं। धान का व्यापार बहुत होता है। यहां डाकखाना और मिडिल स्कूल हैं। एक पुराने किले का टीला है। कहते हैं राजा नल की स्मृति में नलग्राम से बिगड़ कर इसका यह नग्राम नाम पड़ा।

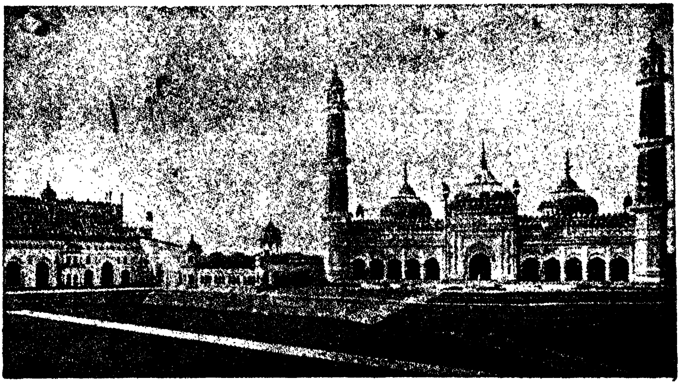
निगोहन लखनऊ से रायबरेली को जाने वाली सड़क के पश्चिम में लखनऊ से २३ मील और मोहन-

लालगञ्ज (तहसील) से ८ मील दूर है। रेलवे स्टेशन गांव से पूर्व की ओर है। यहां प्राइमरी स्कूल, बाज़ार और चर्च आफ इङ्गलैंड मिशन का केन्द्र है। निगोहन बड़ा प्राचीन स्थान है। कहते हैं ब्राह्मण हत्या के दंड में एक राजा को सर्प का रूप मिला था। जब पांडव इधर आये तब उन्हीं ने राजा को श्राप से मुक्त कर दिया और पुराना रूप दे दिया। राजा ने यहां यज्ञ किया नाग यज्ञ होने से इसका नाम नगोहन अथवा निगोहन पड़ा।

सलेमपुर सुल्तानपुर से लखनऊ को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यह गोमती के किनारे एक ऊँचे टीले पर बसा है। गोमती के ऊपर लम्बा पुल बना है। यहां पहले अमेठिया राजपूतों का अधिकार था। फिर यहां शेखों का अधिकार हो गया।

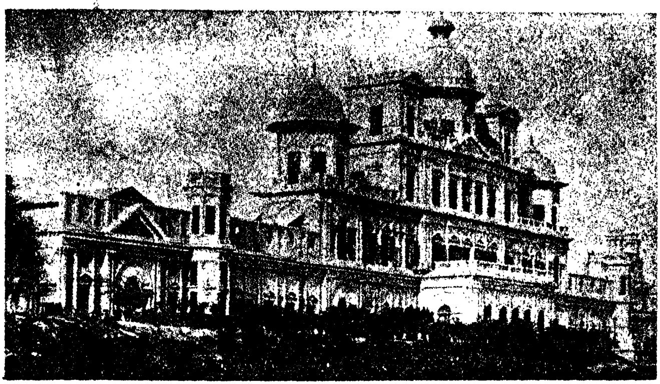
सिसेंडो मोहनलालगंज से ६ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। उन्नाव और रायबरेली के बीच का कुछ व्यापार यहां होकर जाता है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। १८२४ में राजा दृगपालसिंह की विधवा स्त्री ने पाठक अमृतलाल को संकल्प दिया। उसके बेटे मोहन-

लाल से राजा काशीप्रसाद ने यह जागीर प्राप्त की। यहीं राजा चन्द्रशेखर प्रसाद की सम्पत्ति उतरावां मोहनलालगंज से ६ मील दक्षिण-पूर्व की ओर लख-

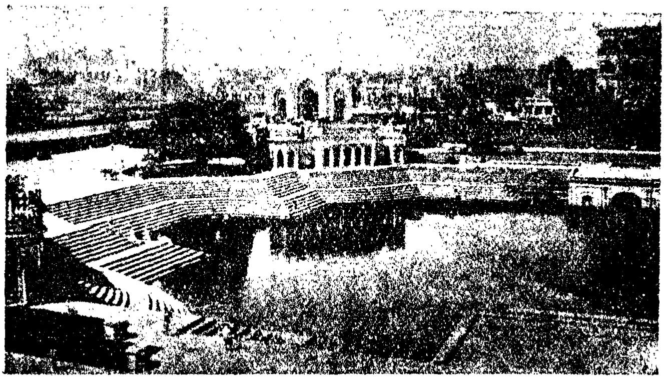


लखनऊ का इमाम बाड़ा

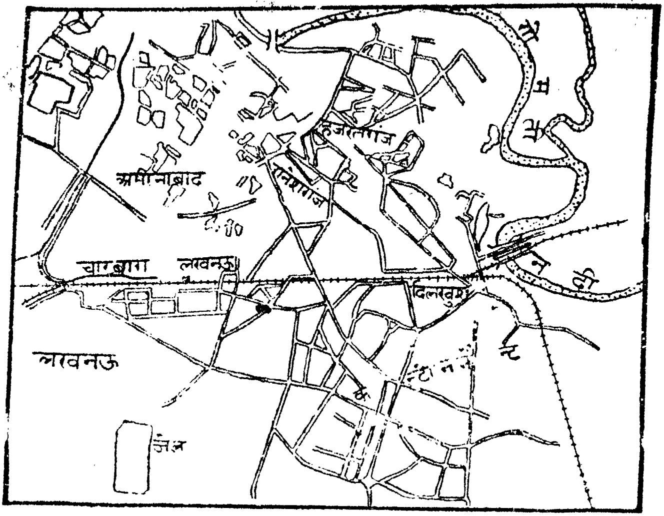
नऊ से रायबरेली को जाने वाली सड़क से ८ मील पूर्व की ओर है। यहां एक स्कूल और बाज़ार है। यहां पहले भारों का किला था। एक भाग इस समय भी किला कहलाता है।

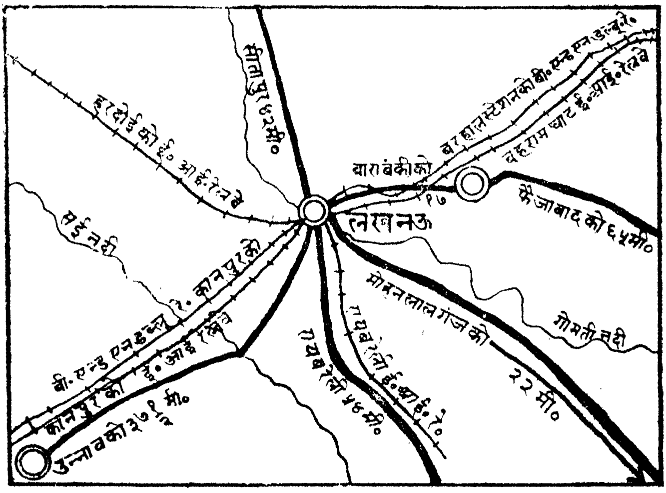


लखनऊ की छतर मंजिल



लखनऊ का चित्र भवन (पिक्चर गेलरी)


गोमती नदी
हजरतगंज
अमीनाबाद
चारबाग
लखनऊ
दिलखुश
लखनऊ
जेल


सीतापुर ६२ मी०
हरदोई को ई० आई० रेलवे
बाराबंकी को
१७
लखनऊ
फैजाबाद को ६५ मी०
सई नदी
कानपुर को
मोहनलालगंज को
२२ मी०
गोमती नदी
रायबरेली ४८ मी०
कानपुर को
उन्नाव को

'भूगोल' का स्थायी साहित्य